प्रतिरक्षा भारती
Pratiraksha Bharti

भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ का मुख्य पत्र

अप्रैल २०२४ • वर्ष-विंशति (२०) • अंक ०४ • मूल्य : १० • वार्षिक मूल्य : १२०

Seminar "Working Womens Leadership: Challenges & Opportunity" Conducted by BPMS at Kanpur

विभिन्न प्रदेशों में महासंघ के पदाधिकारियों द्वारा यूनियनों के साथ संगठनात्म बैठक

सम्पादक की कलम से

– श्री साधू सिंह

मित्रो

आप सभी भली भांति जानते है कि देश में आम चुनाव पूरे जोश में है। राजनैतिक दल देश की जनता से अपने चुनाव घोषणा पत्र के माध्यम से समस्याओ का निस्तारण करने का वायदा कर रही है। तरह तरह के लालीपॉप भी दिए जा रहे है। कुछ ऐसी हास्यास्पद बातें और वायदे भी किये जा रहे है। जैसे एक पार्टी के नेता ने कहा कि चुनाव बाद 30 लाख लोगों को सरकारी नौकरी प्रदान की जाएगी। उसी गठबंधन की एक पार्टी ने एक करोड़ भर्ती की बात की। इस सम्बंध में आप सभी जानते है परंतु फिर भी याद दिला देता हूं। इसी पार्टी की सरकार ने 1984 में केंद्र सरकार की भर्तियों पर पूरे 15 वर्ष तक प्रतिबन्ध लगाया और लाखों पदों को समाप्त कर दिया था। 15 साल बाद 1999 में सरकार दूसरी पार्टी की आई तब आंशिक भर्ती प्रारम्भ हुई जो भर्तियों पर प्रतिबंध के कारण रिक्त स्थान हुए उनका तिहाई भर्तियों को घोषणा हुई। और भर्ती से प्रतिबन्ध आंशिक रूप से हटा। 5 साल सत्ता में रहने के बाद फिर सरकार बदलती है और फिर से उसी दल की सरकार आती है जिसने भर्तियों पर प्रतिबंध लगाया था। 10 वर्ष तक सत्ता में रही परन्तु समाप्त किये गये पदों को नहीं भरा गया। आज 40 साल बाद उस पार्टी की समझ मे आया कि केंद्र सरकार के रिक्त पदों को भरा जाएगा और 30 लाख भर्ती का वायदा किया जा रहा है। यह गारंटी कितनी विश्वसनीय है यह तो समय ही बताएगा।

इसी प्रकार NPS से OPS के मामले में सबसे बड़े विपक्षी दल ने चुप्पी साद ली है। घोषणा पत्र में कोई बादा नहीं किया। सहयोगी दल जो कि अपने प्रान्त तक सीमित है वह सत्ता में आने के बाद पुरानी पेंशन लागू करने की बात कह रहे है। इसमें कितना विश्वास किया जाय जब सत्ता में थे तो अपने प्रदेश में कर्मचारियों पर NPS थोपी 2005 में उत्तरप्रदेश में। फिर 2012 में उनकी सत्ता वापसी हुई 2017 तक सत्ता में रहे लेकिन NPS में कोई सुधार किया और न पुरानी पेंशन लागू की तो कैसे उन पर विश्वास किया जाय कि वह OPS लागू कर देंगे। फिर जो बड़ा दल है वह चुप्पी साधकर बैठा है। यह बोट लेने का स्वाग के अलावा और कुछ नहीं है

कर्मचारियों के लिए एक और अहम मुद्दा है। अपने प्रतिष्ठानों का निजीकरण रोकना कोई दल निजीकरण और निगमीकरण समाप्त करने की बात स्पष्ट रूप से नहीं करता।

आठवें वेतन आयोग के गठन के सम्बंध में सत्ता पक्ष ने घोषणा नहीं की लेकिन विपक्ष ने भी कोई वायदा नहीं किया।

पूरा राजनैतिक परिदृश्य कर्मचारियो के पक्ष में नहीं दिखाई देता। अर्थात चुनाव बाद जो भी सरकार बने हमें उससे कर्मचारियों की मुख्य समस्याओ के लिए संघर्ष करना ही होगा।

अब प्रश्न यह उठता है कि हम किसके पक्ष में बोट करें। मित्रो हम सभी कर्मचारियों के साथ साथ एक आम नागरिक भी है। 5 वर्ष में हमें मताधिकार के अवसर मिलता है हमें मतदान अवश्य करना चाहिये। हम ऐसे दल या गठबंधन को वोट करना चाहिये जो स्थाई सरकार दे सके। जो राष्ट्र को विकास पथ पर ले जा रहा हो जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश की छवि ठीक रख पाने में सक्षम हो। जो देश की सुरक्षा को मजबूत करे। भ्रष्टाचार को रोकने में सक्षम हो। राष्ट्रवादी दल को ही चुनें।

मित्रो देश की कुछ ऐसी समस्याएं है जो आजादी के बाद से लगातार चली आ रही है अभी भी है और आने वाले समय में भी रहेगी। जैसे महंगाई और बेरोजगारी, सभी पार्टियां इन पर बात करती है सत्ता में आने के बाद कुछ भी नहीं कर पाती इनकी जड़ में कोई भी जाना ही नहीं चाहता। देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने का प्रयास करने की बात नहीं होती देश मे घुसपैठियों पर जो रोक लगाने का प्रयास करे उसे सम्प्रदायक बना दिया जाता। इन तमाम विषयों पर विचार करके ही हमें अपना मताधिकार करना है।

❐

2 मई /पुण्यतिथि

आधुनिक विश्वकर्मा बड़े भाई रामनरेश सिंह

''भारतीय मजदूर संघ'' के प्राणाधार श्री रामनरेश सिंह का जन्म 1925 ई. की दीपावली के शुभ दिन ग्राम बघई (मिर्जापुर,उ.प्र) में एक सामान्य किसान श्री दलथम्मन सिंह के घर में हुआ था। 1942 में हाईस्कूल कर चुनार तहसील में नकल नवीस के नाते उनकी नौकरी लग गयी। जब वहां सायं शाखा प्रारम्भ हुई, तो ये तहसील की निर्धारित वेशभूषा में ही वहां आने लगे। शाखा पर आने वालों में सबसे बड़े थे। अतः सब इन्हें 'बड़े भाई' कहने लगे।

उन दिनों माधव जी देशमुख मिर्जापुर में जिला प्रचारक थे। 1944 में ये प्राथमिक शिक्षा वर्ग में गये पर तब तक उन्होंने नेकर नहीं पहना था। उसके लिए मन में संकोच भी था। कार्यकर्ताओं ने उनके नाप का नेकर बनवाकर एक दिन अंधेरे में आग्रहपूर्वक उन्हें पहना दिया। प्रकाश होने पर जब सबने उन्हें देखा, तो जोरदार ठहाका लगाया। इस प्रकार मन की हिचक समाप्त हुई।

प्राथमिक वर्ग के बाद उन्होने अपने गांव में भी शाखा शुरू कर दी। वे हर शनिवार को वहां जाकर सोमवार को वापस आते थे। उनके पिताजी इससे बहुत नाराज थे। एक बार उन्हें इलाज के लिए मिर्जापुर कार्यालय पर रहना पड़ा। तब स्वयंसेवकों ने उनकी बहुत सेवा की, इससे उनके विचार बदल गये। 1946 में बड़े भाई अपनी स्थायी सरकारी नौकरी छोड़कर प्रचारक बन गये। तहसील में अपना काम समय से करने वाले वे एकमात्र कर्मचारी थे। अतः अधिकारियों ने एक महीने तक त्यागपत्र स्वीकार नहीं किया पर ये फिर काम पर ही नहीं गये।

उनका विवाह विद्यार्थी जीवन में ही हो चुका था। प्रचारक बनने पर पिताजी ने कहा कि वनवास काल में रामचंद्र जी सीता को अपने साथ ले गये थे। बड़े भाई ने उत्तर दिया कि मैं तो लक्ष्मण जी की तरह राम का सेवक और भक्त हूं और लक्ष्मण जी वन में अकेले ही गये थे।

बड़े भाई विंध्याचल, मिर्जापुर आदि में जिला प्रचारक रहे। 1948 और 1975 के प्रतिबन्ध काल में उन्होंने सहर्ष कारावरण किया। 1950 में उन्हें कानपुर में प्रभात शाखाओं का काम दिया गया। अपनी जन्मभूमि चुनार में उन्होंने 1950 में पुरुषोत्तम चिकित्सालय, 1952 में माधव विद्या मंदिर तथा 1953 में पंडा समाज की स्थापना की। एक बार उन्होंने भारतीय जनसंघ के टिकट पर चुनाव भी लड़ा। अत्यधिक भागदौड़ से स्वास्थ्य खराब होने पर 1956 में वे कानपुर में संघ कार्यालय तथा वस्तु भंडार के प्रमुख बनाये गये।

'भारतीय मजदूर संघ' की स्थापना होने पर उन्हें कानपुर में ही इसका काम दिया गया। धीरे–धीरे उनका कार्यक्षेत्र बढ़ता गया। उन दिनों संगठन की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। अतः बड़े भाई को जनसंघ की ओर से दो बार विधान परिषद में भेजा गया। विधायकों को मिलने वाली यातायात सुविधा का लाभ उठाकर उन्होंने पूरे प्रदेश में संगठन को सबल बनाया।

आगे चलकर वे मजदूर संघ के राष्ट्रीय महामंत्री बने। उन्होंने मजदूर हित से सम्बन्धित अनेक लेख तथा ट्रेड यूनियन आंदोलन, यूनियन पथ प्रदर्शक तथा भारत में श्रम संघ जैसी पुस्तकें लिखीं। उन्होंने राज्य तथा राष्ट्र–स्तरीय अनेक संस्थाएं बनाकर मजदूर संघ को सबसे आगे पहुंचा दिया। निःसंदेह वे 'आधुनिक विश्वकर्मा' ही थे।

इन्हीं दिनों उनके मस्तिष्क में कैंसर के एक फोड़े का पता लगा। मुंबई में उसकी शल्य क्रिया की गयी। चिकित्सकों ने कह दिया था कि इसका दुष्प्रभाव इनके किसी अंग पर अवश्य पड़ेगा। शल्य क्रिया के बाद इनकी नेत्र ज्योति चली गयी। अब कोई इनसे मिलने आता, तो बात करते हुए इनकी आंखों से आंसू बहने लगते थे। इसी अवस्था में दो मई, 1985 को उनका देहांत हुआ।

उन्नति के मंत्र

– श्री उदय पटवर्धन

हमारा संगठन समाज के उत्थान का साधन बने इसलिये काम कर रहा है। जो स्वयं अपने संगठन को प्रभावी बना पाएंगे वही पूरे समाज के उत्थान का साधन बन सकते है। इसलिये अपनी धुरी हमेशा यही रहती है कि अपने संगठन को कैसे उपयुक्त बनाए? अर्थात उपयोगिता एक कसौटी है एकमात्र नही। चरित्र सेवा, समर्पण, समाज/राष्ट्र हितैषी दृष्टी कोण, सामूहिकता, सक्षमता, सबलता आदि अनेक गुणों से युक्त अपने संगठन को बनाना एवं उसी को उत्थान का आधार बनाकर पूरे समाज का उन्नयन हो यह अपने काम की दिशा रहेगी।

रेत को मुट्ठी में बंद करने जैसा ही यह प्रयास रहता है। किन्तु किसी को भी ऊपर उठना कब आसान रहा है? पानी जैसे हमेशा निम्न स्तर की तरफ बहता है उसी प्रकार से समाज का स्वभाव रहता है, अपनी मर्जी पर छोड दिया तो समाजमन विवेकहीनता के निम्न स्तर पर पहुँचता है।

पश्चिम ने समाजिक व्यवस्था का जो आयाम विकसित किया उसमें व्यक्ति ही एकक है और इनके समूह को चलाने वाली व्यवस्था यही समाज का रुप आज उभरकर आया है। फार्मल व्यवस्था का मानक सोशल सिक्योरिटी क्रमांक बन गया है। क्या समाज बनाने, चलाने और विकसित करने में मानव का कोई योगदान नही ? श्रेष्ठ समाज को श्रेष्ठ संस्कारों की जरुरत होती है। जिसमें जीवन मुल्यों की गहराई एवं उँचाई देने वाले व्यक्तित्व समाज का नेतृत्व करते है।

संस्कारित समाज की संकल्पना

क्या बिना संस्कार कोई व्यक्ति अपने जीवन को आदर्श बना पाएगा ? सामाजिक सुरक्षा क्रमांक किसी को रोटी कपडा, मकान, दवा तो दिला पाएगा। पेंशन एवं रोजगार भी मुहैय्या कराएगा। किन्तू क्या इतिहास भूगोल से परे, गणित और विज्ञान से परे समाज में बसते जीवनमूल्योंकी शिक्षा उसे यहाँ मिलेगी ?

जब पूरानी पिढी अपने, कंधोंपर नयी पीढीका बोझ उठाकर उसे उंचाई तक ले चलेगी तब उस नयी पीढी के पास उंचे जीवन मूल्यों की ऊँचाई होगी नूतन पीढीयों को आगे देने के लिये।

मानवों की झुंड की अवस्था में समाज सड़ेगा और समाज बिखरेगा । किन्तू अगर वह समाज वृक्ष के समान बनेगा तो नये फूले पत्ते फत सब मिलेगे।

अगर अच्छे व्यक्तियों से अच्छा समाज बनता है तो अच्छा समाज बनाने के लिये अपने संगठन को औजार बनाने के लिये निकले कार्यकर्ताओं को पहले अपने को संगठित और उन्नत करना पडेगा।

पहले व्यक्तित्व का गढना। ऐसे व्यक्तियों से बना संगठन ही तो उपयुक्त औजार बन पाएगा। तब तो सारा विवेचन गढे व्यक्तियोंके पास आकर ही धम जाता है। क्योंकि यह चिंतन की नीव है।

अब इस आकलन की पहली पायदान है समाजमन का ठोस आकलन। क्योंकि समाज के उत्थान की चाह रखने वाले उसी समाज से आने वाले है। जब तक समाज मन को ठीक तरह से नही समझेंगे तब तक उसके उन्नयन की चर्चा व्यर्थ है। कैसा है आज के समाज का मन ?

अब पूरे विश्व पर पश्चिम का प्रभाव या दृष्प्रभाव है यह सब मानते है। तो इस वैश्विकरण की प्रक्रिया में नजदीक आयी दुनिया को चरित्रहीनता का गिरता हुआ स्तर देखने को मिल रहा है। फिर आर्थिक सामाजिक समीकरण भी तेजी से बदलते नजर आ रहे है। जीवन में अशांति नित्य बढ़ रही है।

बटोरने की होड़

रोजगार कभी भी छीना जाएगा। बाद में परिवार का लालन पालन कैसे होगा ? यह भविष्य की चिंता में पूरी दूनिया डरी है और सहमी हुयी है। इसलिये जब मिलता है तब बटोर लो कल किसने देखा ? यह मानसिकता बनी है। जमाना क्रेडिट कार्ड का है। रोजगार पाने के लिये पढाई होती है, ज्ञानार्जन के लिये नही। फिर इतना काफी नही होता। टिके रहने के लिये और पढाई करो। जीवन जंग का मैदान बना है। अगर स्टॉक मार्केट की नब्ज थम जाए तो मानो प्रतीत होता है की जीवन ही समाप्त हुआ। सुदूर भविष्य को बनाने के लिये जो संतुलन चाहिये होता है उसकी भनक भी आज नही बन रही है।

अच्छा स्वास्थ, शांतीपूर्ण पारिवारिक जीवन मानो मृग मारीचिका प्रतीत होती है। फिर जीवन के असंतोष और ताप की जिम्मेवारी हमेशा किसी दूसरे पर थोपना एक आसान रास्ता है। लोग बहाने बनाकर सच्चाई से मुख मोड लेते दिख पडते है।

असफलता के बहाने

मै गरीब पैदा हुआ इसलिये मै असफल हूँ। मेरा बाप गर्म मिजाज का था इसलिये मै भी वैसा हूँ। मेरा बॉस अधपागल है इसलिये नौकरी में मुझे कष्ट है। अगर मेरे बच्चे जुनूनी नही होते, तो मेरा परिवार भी बढ़िया होता। अगर मेरी नौकरी ऐसी खटारा नही होती, तो मैं जिंदगी में कहाँ से कहाँ पहुंचता आदि आदि।

यह सूची आप चाहे जितनी बडी बना सकते है। सारी दुनिया पर दोष मढते जाओ। करना धरना कुछ नही। बंदा कुछ नही करेगा। सब किया कराया खुदा का। ऐसे समय में जीवन यापन की एक नयी प्रस्तुती भी देखने को मिलती है। वह है अपेक्षाहीनता। जीवन से अपेक्षा कुछ न रखो। तब जो होगा वह अच्छा ही होगा। जिंदगी में कुछ कर दिखाने की ललक जब मर जाती है, तब ऐसे हताश व्यक्तियों से बना समाज भी चूर चूर होता है।

पुरुषार्थ क्या इसी में ही है की दुनिया को अपनी बहाली के लिये कोसो ? साहस और हिम्मत से डटकर संकट को चुनौती मानते हुए मुकाबला करना और जीतेंगे ही यह विश्वास मन में रखना यह संस्कार ऐसे आसानी से नही उपजता। जमाना खराब है, सरकार ही सब कुछ है मै कुछ नही, इस विशाल देश में मै एक प्यादा हूँ ऐसा कहकर बचकर निकल जाना यह रास्ता अमूमन लोग इसलिए चुनते है की, वह आसान है।

जिंदगी को कष्ट से मुक्त रखने वाली सभी सुविधाएं होने के बावजूद बीमारियाँ, अशांति मुश्किले थमने का नाम ही नही ले रही। काम के घंटे बढे, अधिक कौशल अर्जीत करने का दबाव बढा तो स्वास्थ्य और शान्ति आए कहाँ से ? जिंदगी का संतूलन टूट रहा है।

जिंदगी की दौंड को जीतना, यही जीवन मूल्य बनकर रह गया है क्या ? ऐसा प्रतीत होता है। काम के स्थान पर सहयोगी कम स्पर्धक ज्यादा, स्कूलों में दोस्त कम स्पर्धक ज्यादा। इतना ही नही तो परिवारों में भाई बहन की स्पर्धा। उपर उपरी दिखावा भी करेंगे, एक दुसरे की भूरी भूरी प्रशंसा भी होगी। किन्तू अंदर आग सुलगती दिखती है।

सामूहिकता से जीवन

पर इस कलयुग की विशेषता भी विचित्र सी है। यहाँ अकेला कोई कुछ नही कर पाएगा। जब अहम् का स्थान वयंम् लेगा तब सामुहिकता के आधार पर बडे काम होंगे। पहले जो राजा महाराजा अकेले अंजाम देते थे अब जनतंत्र में सामुहिकता वह कर दिखाएगी। भगवद्गीता के प्रसिद्ध वचन संघे शक्ति कलौयुगे का स्मरण दिलाने वाली स्थिति आज विद्यमान है।

तो आगे बढना और वह भी सबको साथ में लेकर बढना यह जो कर दिखाएगा, दुनिया उसी की है। यह सामूहिकता कैसे आती है ? कैसे पनपती है ? इसका परहेज क्या ? इसको गहराई से समझना आज समय की माँग है।

एक व्यक्ति केन्द्रित व्यवस्था भी इसके विपरीत चलती है। एक ने सोचा समझा बताया और फैसला सबको सुनाया और वह सबने स्वीकार किया तो काम होगा।

किन्तू ऐसी स्थितिमें व्यक्ति बडा होते जाता है नेता बनता है, भगवान भी कहलाता है पर समाज वही रेंगता हुए कीड़े की तरह क्षुद्र बनता दिखता है।

ऐसे बडे लोग जहाँ इकट्ठा हो वहा व्यक्तिवाद के टकराव से व्यवस्था बौनी बनकर रहती है और वह संगठन बडे लोगों का छोटा संगठन बनकर रह जाता है।

सब को उपर उठाओ

आम व्यक्तियों को तराश कर उपयुक्त बनाए। ऐसें व्यक्तियों को यमनियमों में बांधते हुए उनके व्यक्तित्व का उत्थान करना और ऐसी सामूहिकता के लिये अनुकूल व्यक्तियों को सहजभाव से उन्मुक्त होकर काम करने देना चाहिए। सोच, आचार विचार की नींव मजबूत होगी और दिशा तया होगी तब आगे चलने की राह आसान और स्पष्ट सबके सामने रहेगी।

तब मुक्त और अनिर्बंध होकर भी हर एक की सोच उसी प्रकार से चलेगी। कार्यकलाप एक जैसा होगा और क्रिया प्रतिक्रिया भी एक जैसी निकलेगी। हर एक कंकर, शंकर होगा, हर एक बूंद गंगा होगी।

ऐसे मुक्त असंगी अनअहंवादी व्यक्ति धैर्य साहस और उत्साह को मिलाते हुए और मेरे हाथो जो होगा वह प्रभु की असीम कृपा का परिणाम है ऐसा समर्पित निस्वार्थ भाव जो रखेंगे तब ऐसे व्यक्तियों के सामुहिक नेतृत्व में समाज पलेगा बढेगा और स्वस्थ सुंदर होगा। पारिवारिकता के भाव से भरा ऐसा विश्व समाज बनेगा इसमें शक नही होना चाहिये।

विश्व का विरोधाभास

विश्व को चाहिये ऐसा सहयोगी सामुहिक कर्तृत्व और आज दुनिया चली है, न्यूनतम सामुहिक कार्यक्रमां के आधार पर। आज की विडंबना देखिये –

1. आजकी दुनियामें मानव दवाओंकी खुराक खाता है, और अपनेको स्वस्थ मानता है। स्वस्थ जीवन शैली भूल गया है।

2. अपने मनको इतिहास, भूगोल, भाषा, संस्कार की जानकारी अर्जीत करके अपने को गहरा, विशाल और उंचा करनेके बजाय आदमी टी व्ही देखता है। मनोरंजन के लिये स्पार्टस् देखता जादा है। खेलता कम है।

3. एक दूसरे की सुरक्षा, तरक्की, सुखशान्ती प्रदान करनेवाले स्वस्थ सामाजिक रिश्तोंके स्थानपर स्वार्थी संपर्क रखता है।

4. विश्व मंगलमय करनेके आराध्य भगवान है ऐसा न मानते हूवे सेकूलरवाद की बांग देनेमें धन्य मान रहा है।

इसलिये तर्क कुतर्क भरा छीन्नभिन्न समाजमन और श्रध्दाविहीन निराशासे सब घिरे व्यक्ति दिखते है।

मरते समय, तुर्कस्थान का सम्राट रोया था की खजानेमें से एक सोने का सिक्का भी साथ न ले जा सकूंगा। उसी तर्ज पर टी. वी. कार्यक्रम, दफ्तर की तिकडमबाजी, सेकूलरवादी या दांभीक नेतागिरी, यह इसमें से क्या लेकर जाएंगे? यह सोचने की बात है।

जो समाज का नेतृत्व करते है वे एक बार थोडा रुक कर यह सोचे, कि वे आने वाली पूश्तों के लिये कैसी दुनिया छोडे जा रहे है ? कैसा बर्ताव रखने से, विश्वदेव सभी चराचर सृष्टी को, निरंतर सुखशान्ती प्रदान करने का शुभाशीष देंगे। फिर सारे समाज का उन्नयन करने वाली सामुहिकता के पक्षधर अपने व्यक्ति जीवन में कैसे होगें और सभी मिलकर सामुहिक प्रयास करके संगठन बनाएंगे उसका चरित्र क्या होगा ? इसके कुछ संकेत खोजने होगे।

आजतक ऋषि मुनी दार्शनिक चिंतक यही प्रयास करते आये है। विश्व की अच्छे बूरे की उचित व्याख्या क्या है ? और क्या नही

है इनकी मान्यताओं के गहरे अध्ययन से कुछ निचोड के रुप में सामग्री जुटायी जा सकती है।

नेतृत्व का आधार – चरित्र

स्वामी विवेकानंद की मान्यता अमरिका में केवल उनके चरित्र के आधार पर हुई। किन्तू आज के प्रचार युग में प्रभाव बढाने के नये तरीके खोजे जा रहे है। कपडे कौन से और कैसे पहनना, बातचीत का ढंग कैसे रखना, चेहरे पर नित्य मंद हास्य कैसे बरकरार रखना, बातचीत में कौन से मुहावरे पिरोना, सुनने वाले को भूलावे में डालने के नये नये पैमानें अपनाना आदि कितने ही बिंदू सामने आते है। इन पर कितनी ही पुस्तके भी लिखी गयी है।

जॉर्ज वॉशिंगटन से लेकर प्रथम विश्वयुद्ध तक और शायद उसके पूर्व भी विश्व में जिन्होने नेतृत्व किया उन्होने अपने चरित्र को नेतृत्व का आधार बताया। संत तुकाराम कह गये कि, बोले तैसा चाले त्याची वंदावी पाऊले (जिसकी कथनी करनी एक है उसके पैर छूने चाहिये)

नया तंत्र

किन्तू अब नेतृत्व का अपना एक तंत्र बन गया है। अमरिकी राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव में प्रतिस्पर्धी उम्मीदवारों के सलाहकारों की टीम होती है जो उसे चमकाने के हथकंडे अपनाते रहते है। और उसके ऐवज में डालर भी कमाते है। अब यह छवि चमकाने के काम लोग देखते रहते है। एक बार धोखा खाएंगे, पर बार बार नही। अब कई नेता आज यह भी कहते सुने जाते है की मेरा काम देखो, चरित्र का इससे क्या ? मेरी कुर्सी का तकाजा अलग है और मेरी जिंदगी मेरी अपनी है, आप उसमें दखल न दो। महीनों तक विदेशो में गायब रहनेवाले नेता समाज के प्रति समर्पित होने का वादा करते दिख पडते है। चुनाव के बाद एक बार भी लोगों से नही मिलते। वे कैसे नेता ?

ऐसे छलावे से जो सोचा है वह काम कर पाएंगे ? नेता कार्यकर्ता और समाज में एकांगी भाव नही होगा तब सब व्यर्थ है। क्या सभी के अंदर का अपनत्व नही देखना चाहिये ? यह अपनेपन का अहसास काम करेगा या अपने इर्दगिर्द जो भी आए उसे हम अपने प्रभाव बढाने का आगे निकलने का एक साधन मात्र मानकर गोटीयाँ बिछाते जा रहे है।

सबको साथ में ले चलो

भगवान श्रीकृष्ण क्या जानते नही थे की गोप बालों में गोवर्धन उठाने की कितनी कम क्षमता है? तो भी सामुहिक प्रयास के लिये आहूत किया वह गोटीयाँ बिछानेका खेल नही था। उसी तरह अपनेपन के भाव को अक्षुण्ण रखते हुए सबको साथ में लेकर चुनौतियों को पार करने का अपना मन है क्या ?

केवल मै आदर्श कार्यकर्ता हूँ ऐसे मानते हुवे बाकी सब कार्यकर्ता मेरे क्लोन बने ऐसा मन भी ठीक नही। हर एक अपनी विशेषताओं के कारण हर एक दूसरे से अलग है। यही उसका व्यक्तित्व है। तो इन विशेषताओं को कायम रखते हूवे हर एक का विकास हो यह सही दिशा है।

इसके विपरित हथकंडे अपनाने वालों का दोगलापन उजागर होता है। और एक बार कलई खुल गयी तो भरोसा टूटता ही है। और यह शीशा एक बार टूटा तो उसे फिर पहले जैसा नही कर सकते। अपना चाल चलन ठीक नही होगा वह दागी व्यक्ति औरों की प्रेरणा कैसे बन सकता है?

एक बार सुनन में भाषण अच्छा लगेगा किन्तू व्यक्ति की पहचान तो चाल ढाल से ही होगी। तब चलकर रिश्ता बनेगा।

❐

मजदूरों के मसीहा – डा. बी. आर. अम्बेडकर

विचारों का सृजन मस्तिष्क में होता है और वे समाज की प्रयोगशाला में आकर परिवर्तन का उद्घोष करते है। ऐसे ही विचारों के सृजनकर्ता और भारत माता के लाल हम सबके बाबा साहेब आम्बेडकर शून्य से लेकर शिखर तक वैचारिक सीमा रेखा खींचते है परन्तु दुर्भाग्यवश डा. बी आर अम्बेडकर जी के एक संक्षिप्त दायरे में रखने का प्रयास किया गया है।

जबकि उनका कार्यक्षेत्र समता मूलक समाज, अर्थशास्त्र संविधान निर्माता श्रम का उचित सम्मान तक विस्तृत है। इस आलेख में बाबा साहेब के दृष्टिकोण से औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत श्रमिक संगठनों को समझने का प्रयास किया गया है।

सर्वप्रथम बाबा साहेब ने वर्ष 1938 में कांग्रेस पार्टी की सरकार के विधेयक के विरोध में श्रमिकों के हड़ताल करने के रूख का समर्थन किया। इस हड़ताल का आवाहन डा. बी. आर. अम्बेडकर द्वारा स्थापित इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी ने किया था। आज के श्रम कानूनों पर भी उनकी छाप स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

श्रमिक संगठनों के रूप में महत्वपूर्ण रहे लाल झंडे के साम्यवादियों वे मुखर आलोचक रहे है। बाबा साहेब का साम्यवादी श्रमिक विचार धारा को वे राजनैतिक उद्देश्य पूर्ति का साधन मानते थे न कि श्रमिक कल्याण का। साम्यवादी श्रमिक संघों ने मजदूरों के बीच असंतोष पैदा करने हेतु हड़ताल को एक दैवीय साधन मान लिया।

बाबा साहेब का सदैव मानना रहा है कि स्वराज श्रमिकों के हाथों में आ सकता है और श्रमिक समाज को अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु राजनैतिक भागीदारी भी रखनी चाहिए और श्रमिकों की ये जिम्मेदारी है कि वे अपने अधिकारों का उपयोग करके योग्य बने और राष्ट्र निर्माण में अपनी महती भूमिका निभाये।

बाबा साहेब ने श्रम के सम्मान को सुरक्षा दी तथा समाज के हर वंचित तबके को उसका उचित स्थान दिलाने का प्रयास किया। भारतीय मजदूर संघ बाबा साहेब को सदैव '' द आर्किटेक्ट ऑफ लेबर रिफॉर्म्स के रूप में याद रखेगा।

भाषण कला

– श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी

एकाग्रता

प्रकृति का यह सर्वसामान्य सिद्धान्त है कि अपने मन में जिस विषय के सम्बन्ध में जितनी उत्सुकता होगी, उतनी ही उसके प्रति एकाग्रता होती है। अपनी रुचि के विषय में मन अधिक लगता है और स्वाभाविक रूप से वह विषय मन में स्थान कर लेता है और दीर्घकाल तक स्पष्ट रूप से ध्यान में रहता है। परन्तु हर बार स्वरूचि के अनुसार विषय मिले, यह तो सम्भव ही नहीं है। ऐसे प्रसंग उपस्थित होने पर प्रकृति पर निर्भर रहकर काम नहीं चल सकता। इसके लिये इच्छाशक्ति का उपयोग करना होगा। वक्तृत्व के लिये सुरुचिपूर्ण विषय न होने पर जो भी विषय मिला है, उसके प्रति प्रयत्नपूर्वक रूचि उत्पन्न करनी होगी। स्वाभाविक प्रवृत्तियों के विरुद्ध ऐसी शिक्षा शक्ति का संघर्ष प्रथम तो कष्टकारक लगेगा, पर निरन्तर प्रयत्न करते रहने से यह काम सहज साध्य हो सकता है। किसी भी विशेष अवसर पर अन्य सभी विषयों से अपना ध्यान हटाकर प्रस्तुत एक ही विषय पर लक्ष्य केन्द्रित करने की शक्ति असामान्य व्यक्तित्व की पार्श्वभूमि होती है।

स्मरण शक्ति

एकाग्रता तथा उत्तम स्मरण शक्ति का महत्व भी सम समान ही है दुर्बल स्मरणशक्ति का वक्ता अधूरे आयुधों के साथ रणभूमि पर उतरे योद्धा के समान ही है। भूतकाल में अन्तर्मन के भण्डार में जो वस्तुयें संग्रहित हैं, उनमें से जिसकी आवश्यकता हो, उस वस्तु को चेतन मन के सम्मुख प्रस्तुत करने की अन्तर्मन की शक्ति को स्मरण शक्ति कहा जाता है। अन्तर्मन पर स्पष्ट रूप से जिस बात की छाप उभरी हो, उसका स्मरण करना सुलभ होता है। यदि छाप ही अस्पष्ट हो तो उसका स्मरण भी अस्पष्ट और कष्टसाध्य होगा। अतः इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति की, वस्तु की, घटना की या विषय की पहली मानसिक छाप सुस्पष्ट

एकाग्रता

प्रकृति का यह सर्वसामान्य सिद्धान्त है कि अपने मन में जिस विषय के सम्बन्ध में जितनी उत्सुकता होगी, उतनी ही उसके प्रति एकाग्रता होती है। अपनी रुचि के विषय में मन अधिक लगता है और स्वाभाविक रूप से वह विषय मन में स्थान कर लेता है और दीर्घकाल तक स्पष्ट रूप से ध्यान में रहता है। परन्तु हर बार स्वरूचि के अनुसार विषय मिले, यह तो सम्भव ही नहीं है। ऐसे प्रसंग उपस्थित होने पर प्रकृति पर निर्भर रहकर काम नहीं चल सकता। इसके लिये इच्छाशक्ति का उपयोग करना होगा। वक्तृत्व के लिये सुरुचिपूर्ण विषय न होने पर जो भी विषय मिला है, उसके प्रति प्रयत्नपूर्वक रूचि उत्पन्न करनी होगी। स्वाभाविक प्रवृत्तियों के विरुद्ध ऐसी शिक्षा शक्ति का संघर्ष प्रथम तो कष्टकारक लगेगा, पर निरन्तर प्रयत्न करते रहने से यह काम सहज साध्य हो सकता है। किसी भी विशेष अवसर पर अन्य सभी विषयों से अपना ध्यान हटाकर प्रस्तुत एक ही विषय पर लक्ष्य केन्द्रित करने की शक्ति असामान्य व्यक्तित्व की पार्श्वभूमि होती है।

स्मरण शक्ति

एकाग्रता तथा उत्तम स्मरण शक्ति का महत्व भी सम समान ही है दुर्बल स्मरणशक्ति का वक्ता अधूरे आयुधों के साथ रणभूमि पर उतरे योद्धा के समान ही है। भूतकाल में अन्तर्मन के भण्डार में जो वस्तुयें संग्रहित हैं, उनमें से जिसकी आवश्यकता हो, उस वस्तु को चेतन मन के सम्मुख प्रस्तुत करने की अन्तर्मन की शक्ति को स्मरण शक्ति कहा जाता है। अन्तर्मन पर स्पष्ट रूप से जिस बात की छाप उभरी हो, उसका स्मरण करना सुलभ होता है। यदि छाप ही अस्पष्ट हो तो उसका स्मरण भी अस्पष्ट और कष्टसाध्य होगा। अतः इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति की, वस्तु की, घटना की या विषय की पहली मानसिक छाप सुस्पष्टहो। एकाग्रता के समान ही स्मरणशक्ति के लिये भी यह नियम है कि जो विषय उत्सुकता के साथ लिया जावेगा, उसकी ओर मनुष्य का ध्यान पूर्ण रूप से आकृष्ट होता है। जिस ओर पूर्ण ध्यान होता है, उसी की छाप स्पष्ट पड़ती है। और जब कभी आगे इस मानसिक छाप की आवश्यकता उत्पन्न होती है, उसका पता लगाकर उसे जाग्रत मन के स्वाधीन करना अंतर्मन के लिये सुलभ होता है। औत्सुक्य की कमी से ध्यान कम होगा, और कम ध्यान रहने से मानसिक छाप अस्पष्ट होगी तथा इस स्पष्टता की कमी से स्मरण की सुलभता भी नहीं रह सकेगी। संक्षेप में औत्सुक्य और ध्यान का जो प्रमाण होगा, वही मानसिक छाप की स्पष्टता का भी होता है। अतः स्मरणशक्ति के विकास करने के इच्छुक व्यक्ति को विशिष्ट वस्तु, व्यक्ति, विषय या घटना के प्रति उत्सुकता अपने मन में उत्पन्न करना चाहिये और इस बात का भी ख्याल रखना चाहिये कि अपना उसी की ओर है। स्वाभाविक ढंग से यह न होता हो तो इच्छाशक्ति के द्वारा करना चाहिये।

उसके साथ ही इस कार्य के लिये मानसिक साहचर्य (ला आफ मेन्टल एसोसिएशन) नियम का भी उपयोग करना चाहिए मन के भंडार में एकाध बात अकेली रखने पर उसे ढूंढ निकालना कठिन हो जाता है। परन्तु एक मानसिक छाप की, वैसी ही दूसरी छाप के साथ समदृष्य या वैधर्म्य ध्यान में रखकर, मन ही मन उन्हें एकत्र लाकर, उनकी सदृश्य व विधर्मी छाप की किसी एक कड़ी का स्मरण होने पर अन्य कड़ियां भी अपने आप स्पष्ट होकर मन के सम्मुख उपस्थित हो जाती हैं।

यह मानसिक साहचर्य विभिन्न छापों के परस्पर सादृष्य या वैधर्म्य पर आधारित होता है। इसी भांति विभिन्न मानसिक छापों के अनुक्रमबद्ध परस्पर सान्निध्य का भी स्मरण के लिये उपयोग होता है। एक विशिष्ट अनुक्रम से विभिन्न घटनायें अन्तर्मन में प्रथम प्रविष्ट की गई तो आगे उनमें से किसी एक घटना का स्मरण होने पर क्रमबद्ध सान्निध्य से उस घटना के पीछे की व आगे की अन्य घटनाओं का अपने आप स्मरण होता है।

Reinstatement - Rules and Decisions

1. Admissibility of pay and allowances and treatment of service on reinstatement after dismissal, removal or compulsory retirement as a result of appeal or review - 1 When a Government servant who has been dismissed, removed or compulsorily retired is reinstated as a result of appeal or review or would have been so reinstated but for his retirement on superannuation while under suspension or not, the authority competent to order reinstatement shall consider and make a specific order-

(a) regarding the pay and allowances to be paid to the Government servant for the period of his absence from duty including the period of suspension preceding his dismissal, removal or compulsory retirement, as the case may be; and

(b) whether or not the said period shall be treated as a period spent oa duty.

2. Where the authority competent to order reinstatement is of opinion that Government servant who had been dismissed, removed or compulsorily retired has been fully exonerated, the Government servant shall, subject to the provisions of sub-rule (6), be paid the full pay and allowances to which he would have been entitled, had he not been dismissed, removed or compulsorily retired or suspended prior to such dismissal, removal or compulsory retirement, as the case may be:

Provided that where such authority is of opinion that the termination of the proceedings instituted against the Government servant had been delayed due to reasons directly attributable to the Government servant, it may, after giving him an opportunity to make his representation within sixty days from the date on which the communication in this regard is served on him and after considering the representation, if any, submitted by him, direct, for reasons to be recorded in writing, that the Government servant shall, subject to the provisions of sub-rule (7), be paid for the period of such delay, only such amount (not being the whole) of such pay and allowances as it may determine.

3. In a case falling under sub-rule (2), the period of absence from duty including the period of suspension preceding dismissal, removal or compulsory retirement, as the case may be, shall be treated as a period spent on duty for all purposes.

4. In cases other than those covered by sub-rule (2) [including cases where the order of dismissal, removal or compulsory retirement from service is set aside by the appellate or reviewing authority solely on the ground of non- compliance with the requirements of Clause (1) or Clause (2) of Article 311 of the Constitution and no further inquiry is proposed to be held] the Government servant shall, subject to the provisions of sub-rules (6) and (7), be paid such amount (not being the whole) of the pay and allowances to which he would have been entitled, had he not been dismissed, removed or compulsorily retired or suspended prior to such dismissal, removal or compulsory retirement, as the case may be, as the competent authority may determine, after giving notice to the Government servant of the quantum proposed and after considering the representation, if any, submitted by him in that connection within such period (which in no case shall exceed sixty days from the date on which the notice has been served) as may be specified in the notice.

5. In a case falling under sub-rule (4), the period of absence from duty including the period of suspension preceding his dismissal, removal or compulsory retirement, as the case may be, shall not be treated as a period spent on duty, unless the competent authority specifically directs that it shall be so treated for any specified purpose:

Provided that if the Government servant so desires such authority may direct that the period of absence from duty including the period of suspension preceding his dismissal, removal or compulsory retirement, as the case may be, shall I be converted into leave of any kind due and admissible to the Government servant.

NOTE. - The order of the competent authority under the preceding proviso shall be absolute and no higher sanction shall be necessary for the grant of-

(a) extraordinary leave in excess of three months in the case of temporary Government servant; and

(b) leave of any kind in excess of five years in the case of permanent or quasi-permanent Government servant.

6. The payment and allowances under sub-rule (2) or sub-rule (4) shall be subject to all other conditions under which such allowances are admissible.

7. The amount determined under the proviso to sub-rule (2) or under sub- rule (4) shall not be less than the subsistence allowance and other allowances admissible under Rule 53.

8. Any payment made under this rule to a Government servant on his reinstatement shall be subject to adjustment of the amount, if any, earned by him through an employment during the or compulsory retirement, as period between the date of removal, dismissal the case may be, and the date of reinstatement. Where the emoluments admissible under this rule are equal to or less than the amounts earned during the employment elsewhere, nothing shall be paid to the Government servant.

[Fundamental Rule 54.]

(2) Admissibility of pay and allowances and treatment of service on reinstatement without holding further inquiry, where dismissal, removal or compulsory retirement is set aside by a Court of Law. - 1. Where the dismissal, removal or compulsory retirement of a Government servant is set aside by a Court of Law and such Government servant is reinstated without holding any further inquiry, the period of absence from duty shall be regularized and the Government servant shall be paid pay and allowances in accordance with the provisions of sub-rule (2) or sub-rule (3) subject to the directions, if any of the Court.

2 (i) Where the dismissal, removal or compulsory retirement of a Government servant is set aside by the Court solely on the ground of non- compliance with the requirements of Clause (1) or Clause (2) of Article 311 of the Constitution, and where he is not exonerated on merits, the Government servant shall, subject to the provisions of sub-rule (7) of Rule 54, be paid such amount (not being the whole) of the pay and allowances to which he would have been entitled had he not been dismissed, removed or compulsorily retired, or suspended prior to such dismissal, removal or compulsory retirement, as the case may be, as the competent authority may determine, after giving notice to the Government servant of the quantum proposed and after considering the representation, if any, submitted by him, in that connection within such period (which in no case shall exceed sixty days from the date on which the notice has been served) as may be specified in the notice.

(ii) The period intervening between the date of dismissal, removal or compulsory retirement including the period of suspension preceding such dismissal, removal or compulsory retirement, as the case may be, and the date of judgment of the Court shall be regularized in accordance with the provisions contained in sub-rule (5) of Rule 54.

3. If the dismissal, removal or compulsory retirement of a Government servant is set aside by the Court on the merits of the case, the period intervening between the date of dismissal, removal or compulsory retirement including the period of suspension preceding such dismissal, removal or compulsory retirement, as the case may be, and the date of reinstatement shall be treated as das duty for all purposes and he shall be paid the full pay and allowances for the period, to which he would have been entitled, had he not been dismissed, removed or compulsorily retired or suspended prior to such dismissal, removal or compulsory retirement, as the case may be.

4. The payment of allowances under sub-rule (2) or sub-rule (3) shall be subject to all other conditions under which such allowances are admissible.

5. Any payment made under this rule to a Government servant on his reinstatement shall be subject to adjustment of the amount, if any, earned by him through an employment during the period between the date of dismissal, removal or compulsory retirement and the date of reinstatement. Where the emoluments admissible under this rule are e equal to or less than those earned during the employment elsewhere, nothing shall be paid to the Government servant.

[Fundamental Rule 54-A.]

(3) Admissibility of pay and allowances and treatment of service on reinstatement after suspension. - 1. When a Government servant who has been suspended is reinstated or would have been so reinstated but for his retirement (including premature retirement) while under suspension, the authority competent to order reinstatement shall consider and make a specific order-(a) regarding the pay and allowances to be paid to the Government servant for the period of suspension ending with reinstatement or the date of his retirement (including premature retirement), as the case may be; and(b) whether or not the said

period shall be treated as a period spent on duty.

2. Notwithstanding anything contained in Rule 53, where a Government servant under suspension dies before the disciplinary or the Court proceedings instituted against him are concluded, the period between the date of suspension and the date of death shall be treated as duty for all purposes and his family shall be paid the full pay and allowances for that period to which he would have been entitled had he not been suspended subject to adjustment in respect of subsistence allowance already paid.

3. Where the authority competent to order reinstatement is of the opinion that the suspension was wholly unjustified, the Government servant shall, subject to the provisions of sub-rule (8) be paid the full pay and allowances to which he would have been entitled, had he not been suspended:

Provided that where such authority is of the opinion that the termination of the proceedings instituted against the Government servant had been delayed due to reasons directly attributable to the Government servant, it may, after giving him an opportunity to make his representation within sixty days from the date on which the communication in this regard is served on him and after considering the representation, if any, submitted by him, direct, for reasons to be recorded in writing, that the Government servant shall be paid for the period of such delay only such amount (not being the whole) of such pay and allowances as it may determine.

4. In a case falling under sub-rule (3) the period of suspension shall be treated as a period spent on duty for all purposes.

5. In cases other than those falling under sub-rules (2) and (3), the Government servant shall, subject to the provisions of sub-rules (8) and (9) be paid such amount (not being the whole) of the pay and allowances to which he would have been entitled, had he not been suspended, as the competent authority may determine, after giving notice to the Government servant of the quantum proposed and after considering the representation, if any, submitted by him in that connection within such period (which in no case shall exceed sixty days from the date on which the notice has been served) as may be specified in the notice.

6. Where suspension is revoked pending finalization of the disciplinary or the Court proceedings, any order passed under sub-rule (1) before the conclusion of the proceedings against the Government servant, shall be reviewed on its own motion after the conclusion of the proceedings by the authority mentioned in sub-rule (1) who shall make an order according to the provisions of sub-rule (3) or sub-rule (5), as the case may be.

7. In a case falling under sub-rule (5), the period of suspension shall not be treated as a period spent on duty, unless the competent authority specifically directs that it shall be so treated for any specified purpose:

Provided that if the Government servant so desires, such authority may order that the period of suspension shall be converted into leave of any kind due and admissible to the Government servant.

NOTE. The order of the competent authority under the preceding proviso shall be absolute and no higher sanction shall be necessary for the grant of-

(a) extraordinary leave in excess of three months in the case of temporary Government servant; and

(b) leave of any kind in excess of five years in the case of permanent or quasi-permanent Government servant.

8. The payment of allowances under sub-rule (2), sub-rule (3) or sub-rule (5) shall be subject to all other conditions under which such allowances are admissible.

9. The amount determined under the proviso to sub-rule (3) or under sub- rule (5) shall not be less than the subsistence allowance and other allowances admissible under Rule 53.[Fundamental Rule 54-B.1

(4) **FR 54 absolute and unconditional.-** A Government servant was dismissed from service on the 8th March, 1927, and on appeal, was reinstated with effect from the 27th October, 1927. The appellate authority declared, under FR 54, that the period of unemployment between the dates of dismissal and reinstatement should be treated as spent on duty and allowed to count for leave and increments. As there was no post against which the lien of the Government servant could be shown for the period of dismissal, the question arose whether in the absence of lien on a permanent post the period of unemployment could count for leave or increments. It was decided that FR 54 is absolute and unconditional and that it could not be absolute if the condition of "lien" had first to be satisfied.

[GI., F.D. No. F. 28/R. 1/28, dated the 5th April, 1928.]

(5) **Clarifications regarding FR 54.-** The Government of India have conveyed the following clarifications in regard to certain points which have been raised in connection with the application of FR 54.

Point raised - (1) Where the period of absence is treated as "duty" for all purposes whether it will be in order to limit the Government servant's pay to the subsistence allowance already paid.

Clarification - The decision of the competent authority under FR 54, FR 54-A and FR 54-B is in respect of two separate and independent matters, viz., (a) pay and allowances for the period of absence, and (b) whether or not the period of absence should be treated as duty.

Point raised - (2) Where the period of absence is treated as "non-duty" whether the competent authority can pay full pay and allowance for this period.

Clarification - It is not necessary that the decision on (a) above should depend upon the decision on (b) above.

The competent authority has the discretion to pay the proportionate pay and allowances and treat the period as duty for any specified purpose(s) or only to pay the proportionate pay and allowances. It has no discretion to pay full pay and allowances when the period is treated as "non-duty".

If no order is passed under FR 54 (5) directing that the period of absence be treated as duty for any specified purpose, the period of absence should be treated as "non-duty". In such event, the past service (i.e.,) service rendered before dismissal, removal or compulsory retirement or suspension will not be forfeited.

Point raised - (3) Whether it is necessary to invoke the law of limitation of restricting, the payment to a period of three years prior to the date of reinstatement, while paying the arrears of pay and allowances for the period from the date of dismissal/removal/compulsory retirement/suspension to the date of reinstatement in respect of persons who are reinstated.

Clarification - As Fundamental Rule 54 is absolute, the law of limitation need not be invoked at the time of paying the arrears of pay and allowances for the period from the date of dismissal/removal/compulsory retirement / suspension to the date of reinstatement in respect of cases where the pay and allowances are regulated on reinstatement in accordance with the provisions contained i:: FR 54, FR 54-A and FR 54-B.

[G.I., M.F. O.M. No. 15 (14)-E. IV (59), dated the 25th May. 1962 and the 9th August, 1962, read with provisions of FR 54, FR 54-A and FR 54-B.]

(6) When suspension regularized as leave, consequential recovery inescapable. A question having arisen whether in cases where the period of suspension is ordered to be treated as one spent on leave and when on conversion it is found that the greater part of the period is to be treated as extraordinary leave for which no leave salary is admissible, the recovery of the subsistence allowance already paid would be in order, the Ministry of Finance have decided in consultation with the Comptroller and Auditor-General of India that there is no bar to the conversion of any portion of a period of suspension into extra- ordinary leave. In the case of persons who are not fully exonerated, the conversion of the period of suspension into leave with or without allowances has the effect of removing the stigma of suspension and all the adverse consequences following therefrom. The moment the period of suspension is converted into leave, it has the effect of vacating the order of suspension and it will be deemed not to have been passed at all. Therefore, it is found that the total amount of subsistence and compensatory allowances that an officer received during the period of suspension exceeds the amount of leave salary and allowances, the excess will have to be refunded and there is no escape from this conclusion.

[GI., M.F., U.O. No. 3409-E. IV/53, dated the 25th April, 1953; U.O. No. 320-E. IV- 54, dated the 22nd February, 1954, to the Communications Division and M.F., (C's) U.O. No. 1681-C. II/54, dated the 2nd March, 1954.**1**

(7) Regulation of suspension period on discharge from erroneous detention - 1. It has accordingly been decided that in the case of a Government servant who was deemed to have been placed under suspension due to his detention in police custody erroneously or without basis and thereafter released without any prosecution having been launched, the competent authority should apply its mind at the time of revocation of the suspension and reinstatement of the official and if he comes to the conclusion that the suspension was wholly unjustified, full pay and allowances may be allowed.

[GI., M.H.A., O.M. No. 35014/9/76-Estt., dated the 8th August, 1977.]

2. The above instructions may be kept in view and scrupulously complied with in all cases where deemed suspension is found to be erroneous and the employee concerned is not prosecuted. In all such cases, the deemed suspension under Rule 10 (2) of CCS (CCA) Rules, 1965, may be treated as revoked from the date the cause of the suspension itself ceases to exist, i.e., the Government servant is released from police custody without any prosecution having been launched. However, it will be desirable for the purpose of administrative record to make a formal order for revocation of such suspension under Rule 10 (5) of the CCS (CCA) Rules, 1965.

[GI., Min. of Per. & Trg., O.M. No. 11012/16/85-Estt. (A), dated the 10th January, 1986.]

(8) Period of suspension to be treated as duty if minor penalty only is imposed. - It is directed to invite attention to this Department, O.M. No. 43/56/ 64-AVD, dated 22-10-1964, containing the guidelines for placing Government servants under suspension and to say that these instructions lay lay down, inter alia, that Government servant could be placed under suspension if a prima facie case is made out justifying his prosecution or disciplinary proceedings which are likely to end in his dismissal, removal or compulsory retirement. These instructions thus make it clear that suspension should be resorted to only in those cases where a major penalty is likely to be imposed on conclusion of the proceedings and not a minor penalty. The Staff Side of the Committee of the National Council set up to review the CCS (CCA) Rules, 1965, had suggested that in cases where a Government servant, against whom an inquiry has been held for the imposition of a major penalty, is finally awarded only a minor penalty. the suspension should be considered unjustified and full pay and allowances paid for suspension period. Government have accepted this suggestion of the Staff Side. Accordingly, where departmental proceedings against a suspended employee for the imposition of a a major penalty finally end with the i imposition of a minor penalty, the suspension can be said to be wholly unjustified in terms of FR 54-B and the employee concerned should, therefore, be paid full pay and allowances for the period of suspension by passing a suitable order under FR 54-B.

[GI., Dept. of Per. & Trg., O.M. No. 11012/15/85-Estt. (A), dated the 3rd December, 1985.1

(9) Period of deemed suspension due to detention by police to be s duty, if not followed by treated as duty, conviction. - 1. In the Committee of National Council (JCM) set up to review the CCS (CCA) Rules, 1965, the Staff Side had expressed the view that the period of deemed suspension on grounds of detention should be treated as duty in all cases where conviction did not follow. The matter was discussed and it was agreed to that in cases of deemed suspension, if the cause of suspension ceases to exist, the revocation of the suspension should be automatic.

2. Attention is invited to the instructions contained in this Department's O.M. No. 35014/9/76-Estt. (A), dated 8-8-1977 (copy enclosed) which provides that in the case of a Government servant, who was deemed to have been placed under suspension due to detention in police custody erroneously or without basis and thereafter released without any prosecution having been launched, the competent authority should apply its mind at the time of revocation of the suspension and reinstatement of the official and if he comes to the conclusion that the suspension was wholly unjustified, full pay and allowances may be allowed. These instructions may be kept in view and scrupulously complied with in all cases where deemed suspension is found to be erroneous and the employee concerned is not prosecuted. In all such cases, the deemed suspension under Rule 10 (2) of CCS (CCA) Rules, 1965, may be treated as revoked from the date the cause of the suspension itself ceases to exist, i.e, the Government servant is released from police custody without any prosecution having been launched. However, it will be desirable for the purpose of administrative record to make a formal order for revocation of such suspension under Rule 10 (5) of the CCS (CCA) Rules, 1965.

[GI., Min. of Per. & Trg., O.M. No. 11012/16/85-Estt. (A), dated the 10th January, 1986.]

ENCLOSURE

1. One of the items considered by the National Council (JCM) was a proposal of the Staff Side that a Government servant who was deemed to have been placed under suspension on account of his detention or on account of criminal proceedings against him, should be paid full pay and allowances for the period of

suspension, if he has been discharged from detention or has been acquitted by a Court.

2. During the discussion, it was clarified to the Staff Side that the mere fact that a Government servant who was deemed to have been under suspension, due to detention or on account of criminal proceedings against him, has been discharged from detention without prosecution or has been acquitted, by a Court, would not make him eligible for full pay and allowances because often the acquittal may be on technical grounds, but the suspension might be fully justified. The Staff Side were, however, informed that if a Government servant was detained in police custody erroneously or without any basis and thereafter he is released without any prosecution, in such cases, the official would be eligible for full pay and allowances.

3. It has accordingly been decided that in the case of a Government servant who deemed to have been placed under suspension due to his detention in police custody erroneously or without basis and thereafter released without any prosecution having been launched, the competent authority should apply its mind at the time of revocation of the suspension and reinstatement of the official and if he comes to the conclusion that the suspension was wholly unjustified, full pay and allowances may be allowed.

[G.I., M.H.A., Department of Personnel and A.R., O.M. No. 35014/9/76-Estt., dated the 8th August, 1977.]

(10) Emoluments when suspension treated as qualifying service. - 1. A question has been raised as to what emoluments are to be taken into account for calculating the pension in the case of a person who has been suspended and subsequently reinstated without forfeiture of past service, the pay and allowances for the suspension period being restricted to the subsistence allowance already drawn. The Ministry of Finance had clarified that the difference between the subsistence allowance and emoluments which he would have drawn had he not been suspended cannot be treated as increase in pay for the purpose of proviso to Note 1 below Rule 34 of CCS (Pension) Rules, 1972.

2. A case has come to notice where an official was placed under suspension in 1965 but was reinstated in 1974 and the orders of reinstatement stated that the period of suspension would be counted as duty for all purposes but the pay and allowances in respect of the period of suspension would be restricted to the subsistence allowance already drawn. In this case, as per rules, the pay on reinstatement was to be fixed in the revised scale introduced with effect from 1-1-1973 and notionally regulated increments due duly allowed. In this connection, for the purpose of determining pensionary benefits, it is hereby clarified that having fixed the pay in the revised scale, it would not be correct to certify that the employee concerned would continue to draw pay in the old scale from 1-1-1973 onwards, had he not been suspended. The old scale having been replaced by the revised scale with effect from 1-1-1973, the correct course would be to take into account the notional pay in the revised scale for the period from 1-1-1973 onwards.

[GI., Dept. of Personnel & A.R., O.M. No. 27/1/81-Pension Unit, dated the 5th April, 1982.]

❐

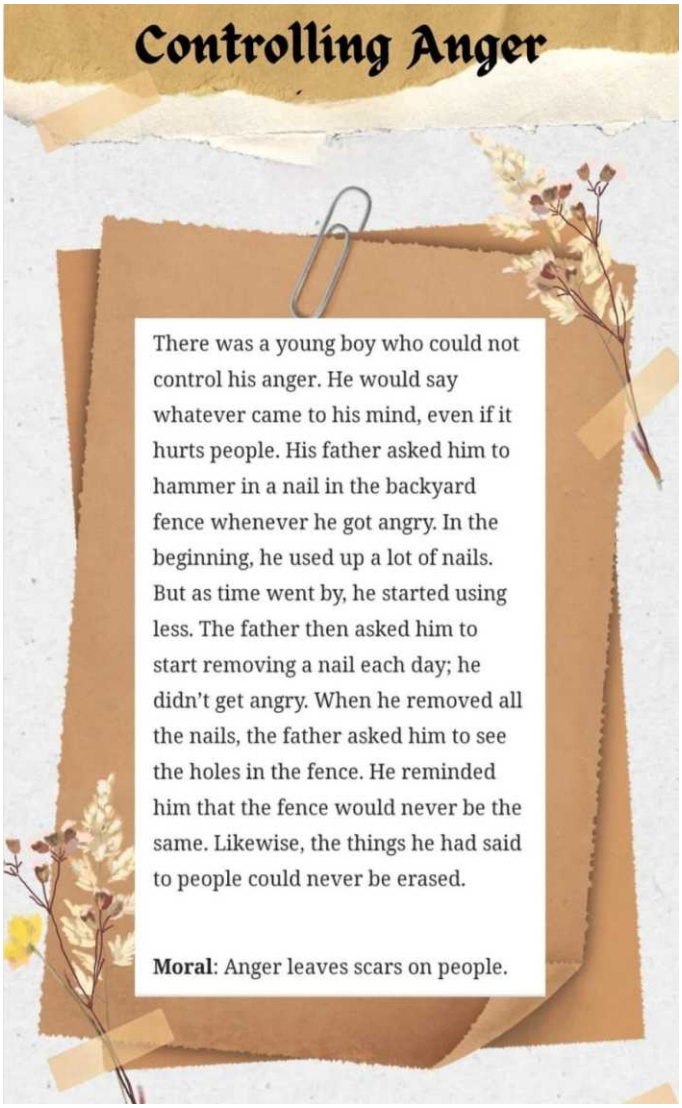

Unauthorized Absence

FR 17-A.- Without prejudice to the provisions of Rule 27 of the Central Civil Services (Pension) Rules, 1972, a period of an unauthorized absence-

(i) in the case of employees working in industrial establishments, during a strike which has been declared illegal under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947, or any other law for the time being in force;

(ii) in the case of other employees as a result of acting in combination or in concerted manner, such as during a strike, without any authority from, or valid reason to the satisfaction of, the competent authority; and(iii) in the case of an individual employee, remaining absent unauthorizedly or deserting the post;

shall be deemed to cause an interruption or break in the service of the employee, unless otherwise decided by the competent authority for the purpose of leave travel concession, quasi-permanency and eligibility for appearing in departmental examinations, for which a minimum period of continuous service is required.

EXPLANATION 1.- For purposes of this rule, "Strike" includes a general. token, sympathetic or any similar strike, and also a participation in a bandh or in similar activities.

EXPLANATION 2.- In this Rule, the term "Competent Authority" means the "Appointing Authority".

For interpretation of what constitutes a "strike", a reference may be made to Instruction below Rule 7 of CCS (Conduct) Rules.

GOVERNMENT OF INDIA'S DECISION

(1) Reasonable opportunity to be given before invoking the penal provisions. - FR 17-A provides that a period of an unauthorized absence, in the category of cases mentioned therein, shall be deemed to cause an interrup- tion or break in the service of the employees, unless otherwise decided by the competent authority for certain purposes. An order passed by the P & T authorities in the case of some of their employees, invoking FR 17-A was struck down by the Lucknow Bench of Allahabad High Court on the ground that issue of such an order without giving a reasonable opportunity of representation and being heard in person, if so desired, to the person concerned, would be against the principle of natural justice. The question of amending FR 17-A as also Rule 28 of the CCS (Pension) Rules and SR 200 is under consideration in consultation with the Ministry of Law.

2. The above position is brought to the notice of all Ministries / Departments so that if there are occasions for invoking FR 17-A, etc., they may keep in mind the procedural requirement that an order under FR 17-A, etc., should be preceded by extending to the person concerned a reasonable opportunity of representation and being heard in person if so desired by him/her.

[GI., Dept. of Per. & Trg., O.M. No. 33011/2 (S)/84-Estt. (B), dated the 2nd May, 1985.]

The Committee on Subordinate Legislation of Rajya Sabha which examined the provision of Rule 28 of the CCS (Pension) Rules, 1972, has recommended that opportunity of representation should be given to the Government employee before making entry in the service book regarding forfeiture of past service because of his participation in strike. While giving evidence before it, the Committee has been assured that the provisions of the above order will be strictly adhered to in each and every case falling within the scope of Clause (b) of Rule 28 of the CCS (Pension) Rules, 1972. These instructions are, therefore, brought to the notice of the various Ministries / Departments of the Government of India for careful compliance.

[G.I., Dept. of Per. & Trg., O.M. No. 33011/2 (S)/84-Estt. (B), dated the 10th March, 1988.]

DIRECTOR-GENERAL P&T ORDERS

(1) Treatment of unauthorized absence as dies non or resulting in break in service.- Instructions have been issued from time to time that unauthorized absence in pursuance of concerted action by a group of employees acting in combination should be treated as unauthorized absence resulting in break in service. Only individual cases of unauthorized absence from duty which is not in pursuance of concerted action by a group of employees acting in combination may, however, be treated as dies non. Dies non does not constitute break in service but only the days treated as dies non are not counted as duty for any purpose. Under no circumstances, absence on the part of a group of employees in combination or in a concerted manner should be treated merely as dies non but it should be treated as unauthorized absence constituting break in service.

To be continued.....

Government ORDERS

सत्यमेव जयते

No.Z15025/23/2023/DIR/CGHSI/3667671/2024 Comp No. 8236195, भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना महानिदेशालय*, Dated - 15.04.2024*

Office Memorandum

In Continuation of the OM No.Z-15025/23/2023/DIR/CGHS, dated 28.03.2024, it is hereby brought to the notice of CGHS benificiaries, that:

A) Creation of ABHA ID (ABHA number) has been extened for a time period of 90 days, w.e.f. 30.06.2024 (3 month from 30.06.2024)

B) Linking of ABHA Number with CGHS card has been extended for a time period of 120 days, w.e.f. 30.06.2024.

C) In order to assist the CGHS befeficiaries, KIOSKS shall be made perational at all the wellness centres by 30.06.2024.

D) The beneficiaries may visit their nearest CGHS wellness centre on need basis for availing assistance in respect of:

1. updating their mobile number.
2. correction of error(s) in name, year of boirth or gender
3. linking of CGHS beneficiary ID to ABHA number, from 01.07.2024 onwards.

This issues with the approval of the competent authority

No.12/01/2022-JCA Government Of India, Ministry Of Personal, Public Grievances And Pensions (Department of Personnel & Training Establishment (JCA) Section, Dated - 05/04/2024

Subject : Closing of Central Government Office in connection with General Election to Lok Sabha 2024and General Election to the Legislative Assemblies of Andhra Pradesh, Arunachal Pradesh Odisha & Sikkim and Bye elections to fill the clear vacancies in Assembly Constituencies of various States Grant of Phase wise Paid Holiday regarding

The undersigned is directed to say in connection with the General Elections to the Lok Sabha 2024 and General Election to the Legislative Assemblies of Andhra Pradesh. Arunachal Pradesh, Odhisha & Sikkim and Bye elections to fill the clear vacancies in Assembly Constituencies of various States sheduled to held during April-June 2024 the following guidlines already issued by DOPT vide OM No 12/14/99-JCA dated 10 October, 2001 have to be followed for closing of the Central Government Offices including industrial Establishments in the States -

(i) The relevant offices/organizations shall closed on the day of poll in the notified areas where general elections to the Lok Sabha and State Legislative Assembly are scheduled to be conducted.

(II) In connections with bye-election to State Assembly, only such of the employees who are bona-fide voters in the relevant constituency should be granted special casual leave on the day of polling. Special Casual leave may also be granted to an employee who is ordinarily a resident of constituency and registered as a voter by employed in Central Government Organization/Industrial Establishment located outside the constituency having a gereralbye-elections.

2. The above instructions may be brought to the notice of all concerned.

No.DOPT-1712030994647 Government of India Ministry of Personnel, Public Grievances & Pensions Department of Personnel and Training ESTT. (Estt. Allowance), (Dated 02 April, 2024)

Subject : Allowances

Department of Personnel & Training has issued various instructions from time to time on various Allowances applicable to Central Government Employees. The essence of these instructions has been summarized in the following paras for guidance and better understanding.

1. Children Education Allowance (CEA)

Consequent upon the decisions taken by Government to implement the recommendation of 7th CPC, this department has issued an OM No. A-27012/01/2017-Estt.(AL) dated 17.07.2018. The salient features of CEA are:

(i) CEA/Hostel Subsidy can be claimed only for the two eldest surviving children.

(ii) The amount of CEA will be Rs. 2250/- per month per child.

(iii) The amount of hostel subsidy is Rs. 6750/- per month.

(iv) The reimbursement of CEA for Divyang Children of Government servant shall be payable at

double the normal rate of CEA i.e. Rs. 4500/- per month. In a case where Divyang Child is not able to attend school, the reimbursement of CEA for availing education / special education at residence, shall be made at double the normal rates of CEA subject to production of payment receipted by teacher/instructor etc. and self-certification by the Central Government servant for availing education of their child at his/her residence.

(v) The rate of CEA would be raised by 25% every time the DA on the revised pay structure goes up by 50%.

(vi) The CEA and Hostel subsidy is admissible in respect of children studying from three classes before class one to 12th standard in accordance. before class one to 12th standard in accordance.

OM No: A-27012/01/2022-Estt.(AL) Dated: 17/2/2023

OM No: A-27012/01/2023-Pers.Policy(Allowance) Dated: 14/3/2024

OM No: A-27012/02/2017-Estt.(AL) Dated: 17/7/2018

2. Risk Allowance

(i) As per decision taken by the Government on the recommendation of 7th CPC rates of Risk Allowance were revised.

(ii) Risk Allowance is presently given to Central Government employees engaged in hazardous duties or whose work will have a deleterious effect on health over a period of time.

(iii) The Risk Allowance will not be treated as "Pay" for any purpose.

OM No: A-27018/02/2022-Estt.(AL) Dated: 2/9/2022

3. Night Duty Allowance (NDA) Consequent upon the decision taken by Government on the recommendations made by 7th CPC on the subject following guidelines has been issued:

(i) Night duty will be defined as duty performed between 22:00 hours and 6:00 hours.

(ii) A uniform weightage of 10 minutes shall be given for every hour of night duty performed.

(iii) The ceiling of basic pay for entitlement of NDA shall be Rs 43600/- per month.

(iv) The hourly rate of NDA equal to [(BP+DA)/200] will be paid and the basic pay and DA for the calculation of NDA rates shall be the basic pay and DA prevalent as per 7th CPC.

(v) The amount of NDA will be worked out separately for each employee depending upon the basic pay the concerned employee is drawing on the date of performing the night duty.

OM No: A-27016/02/2017-Estt.(AL) Dated: 13/7/2020

4. Over Time Allowance (OTA) Consequent upon the recommendations of 7th CPC as accepted by the Government, it has been decided that:

(i) "Ministries/Departments to prepare a list of those staff coming under the category of 'Operational Staff'. Rates of Overtime Allowance not to be revised upwards".

(ii) The following definition has been used to define Operational Staff: "All non-ministerial, nongazetted Central Government Servants directly involved in smooth operation of the office including those tasked with operation of some electrical or mechanical equipment."

(iii) The concerned Administration Wing of the Ministries/Departments will prepare a list of operational staff with full justification based on the above parameters for inclusion of a particular category of staff in the list of operational staff with the approval of JS (Admn.) and Financial Adviser of the concerned Ministry/Department.

(iv) The grant of OTA may be linked to biometric attendance.

OM No: A-27016/03/2017-Estt.(AL) Dated: 19/6/2018

5. Special Allowance Payable to Parliament Assistants

(i) As per the decision taken by the Government on 7th CPC recommendations to enhance the rates of Special Allowance payable to those wholly engaged in Parliament work during Parliament session by 50% from the existing levels of Rs. 1500/- and Rs. 1200/- payable to Assistants and UDCs respectively to the level of Rs. 2250/- and Rs 1800/-.

(ii) The allowance will be admissible at full rates for every calendar month in which the Parliament is in session for at least 15 days in that month. For month with shorter period, the allowance will be admissible half the rates prescribed for the full month.

(iii) No OTA shall be paid to Parliament Assistants for the calendar months in which the Parliament is in session.

OM No: No. A-27023/02/2017-Estt (AL) Dated:

24/10/2017

6. Special Allowance for Child Care for Women with Disabilities

(i) For providing extra benefits to women employees with disabilities especially when they have young children and children with disabilities, it has been decided that women with disabilities shall be paid Rs. 3000/- per month on Special Allowance for child care. The allowance shall be payable from the time of the child's birth till the child is two years old.

(ii) The above limit would be raised by 25% every time the Dearness Allowance on the revised pay structure goes up by 50%.

OM No: No. A-27012/03/2017-Estt. (AL) Dated: 16/8/2017

F. No. 01(14)/2016-E.II(A) (Part-III) Government of India Ministry of Finance Department of Expenditure North Block, New Delhi Dated 01 April 2024

Subject: Waiver of recovery of excess payment made to Government employees - General instructions for Ministries/Departments - reg.

The undersigned is directed to say that Rule 15 of Delegation of Financial Power Rules (DFPRs), 2024 deals with waiver of recovery of overpayment made to Government Servants. As per this rule, a Department of Government of India, an Administrator and any other Subordinate Authority to the Department, to whom powers may be delegated by or under special order of the President, may waive the recovery of an amount found to have been overpaid mistakenly to Government servant, in excess of their entitlement, subject to certain conditions. and financial limits as laid down under this rule.

2. The date of order for recovery of overpayment is a critical input for decision regarding waiver of such recovery. Therefore, such order for recovery of overpayment should be issued within one month from the date of detection of overpayment.

3.As per Rule 15 of DFPR 2024, a Department of Government of India maywaive recovery of overpayment upto Rs. 2,00,000/- (Rupees two lakh only) in the case of each individual with the concurrence of Financial Adviser of the Department. The following guidelines may be adhered to while processing such cases:

(i) The Ministries/ Department should examine all proposal(s) in terms of the provisions laid down in Rule 15 of DFPRs.

(ii) Ministries/ Departments should verify that in cases of waiver, no serious negligence has taken place on the part of any Government servant, which may call for disciplinary action by a higher authority.

(iii) In case a Ministry/ Department is of the view that the loss is on account of a defect in existing rules or procedures, the same shall be brought to the notice of Department/ Ministry with authority to amend such rules or procedures.

(iv) The guidelines issued by DoP&T vide its O.M. dated 02.03.2016 shall be strictly adhered to by the administrative Ministry/Departmentwhile considering waiver of excess payment made to Government servants. Each case of waiver should be recommended by the Financial Advisor and approved by the Administrative Secretary.

(v) In cases where the waiver of recovery arises from a Court direction, the Ministries/ Departments should satisfy themselves that there are appropriate justifications for not challenging such Court direction.

(vi) In case a recovery which is subsequently waived, is on account of incorrect interpretation of rules or procedures, Ministries/ Departments may review all similarly placed cases to check requirement of waiver of recovery in future cases. In case of incorrect interpretation of rules or procedures, Ministries/ Departments shall take appropriate measures to ensure that such lapses are corrected. If any inquiry has been made to fix the responsibility, the final report as well as action taken by the Ministry may be kept on record.

(vii) In case an incorrect interpretation of rules or procedures(e.g., incorrect pay fixation) has remained un-detected over a long period of time, Ministry/ Department may keep on record appropriate justification why such cases were not noticed during regular review, internal audit, etc.

4. Cases involving waiver of recovery of more than Rs. 2,00,000/- (Rupees two lakh only) should be referred to this Department. Such cases may be forwarded along with a detailed note covering information on para 3 along with the filled in checklist (attached as Annexure to this O.M.).

5. This issues with the approval of the Competent Authority.

टी.सी.एल. समूह के यूनियनो द्वारा ओ.टी.ए. एरियर भुगतान के लिए आन्दोलनात्मक कार्यक्रम किये गये

RNI No. MAHBIL/2002/8760 Publication Date : 30 April. 2024

MONTHLY NEWS PAPER

Postal Regd. No. Misc-II/C.P.M//007/K.PH.O./2020 dt 29-12-2020 (for 2021-23)• Posted on Dt. 26,27th Monthly

विभिन्न रक्षा संस्थानों में महासंघ की विचारधारा से प्रभावित होकर लोगों ने महासंघ की सदस्यता ग्रहण किया

कृपया अपनी प्रतिक्रियाएँ हमें इस पते पर भेजिये।

If undelivered please return to :

"Pratiraksha Bharti"

C/o. Bharatiya Pratiraksha Mazdoor Sangh
2, Naveen Market, Kanpur - 208 001
Mob. : 9450153677, Tel./Fax : 0512-2332222
Website : www.bpms.org.in
E-mail : gensecbpms@yahoo.co.in, cecbpms@yahoo.in

बुक पोस्ट

Publisher and Owner : Bhartiya Pratiraksha Mazdoor Sangh, 2 Naveen Market, Kanpur-208001
Printed at Chhaya Press 8/208, Arya Nagar, Kanpur-208002 • Mob. : 9839223650